हिन्दी ग़ज़ल का उद्‌भव, विकास एंव संभावनाऐं

नमूना • SAMPLE

SAMPLE

हिन्दी ग़ज़ल का उद्‌भव, विकास एंव संभावनाऐं

प्रतिभा सक्सेना

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

नमूना • SAMPLE

द्वारा प्रकाशित



अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

हिन्दी ग़ज़ल का उद्‌भव, विकास एंव संभावनाऐं

संस्करण : 2020
© लेखक
ISBN: 978-81-947936-4-9

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

नहीं • SAMPLE

समर्पण



सृष्टि– सृजन के प्रतीक स्नेहमयी पिता

(स्वर्गीय श्री देवेन्द्र कुमार सक्सेना)

एंव माताजी

(श्रीमती विद्या सक्सेना)

को अर्पित

SAMPLE

SAMPLE

विषय–सूची

	प्राक्कथन	*vii*
1.	हिन्दी ग़ज़ल का उद्‌भव, विकास एवं संभावनायें	1
2.	ग़ज़ल का तार्किक विवेचन	22
3.	हिन्दी ग़ज़ल का क्रमिक विकास और उसके तेवर	42
4.	वस्तु विधान	84
5.	हिन्दी ग़ज़ल की छन्द एवं भाषिक संरचना	115
6.	गजल गायन में कवि शायरों की लेखनी के अनुसार आये स्वाभाविक पड़ावों की जाँच–परख एवं उनका तथ्यात्मक विवेचन	148
7.	उपसंहार	177

नमूना SAMPLE

SAMPLE

प्राक्कथन

वर्तमान परिवेश में हिन्दी ग़ज़ल अपने सम्पूर्ण कलेवर के साथ कविता, साहित्य और संगीत की त्रिवेणी बनकर छा गयी है। फ़िल्म हो कवि सम्मेलन हो अथवा ''शाम ए ग़ज़ल'' और ''गीत सन्धाओं'' की शानदार महफ़िलें ग़ज़ल सब जगह बाअदब हाज़िर है।

संगीत स्नातकोत्तर अध्ययन के समय ही मैं ग़ज़लों के रोमांचक इतिहास के प्रति बहुत कुछ जानने को उत्सुक रहती थी। मेरी जिज्ञासा को विद्वान गुरूजनों का सहयोग मिला और मैने ग़ज़ल गायकी को आमेलित करते हुए हिन्दी ग़ज़ल के उदभव विकास एंव सम्भावनाओं पर बिख़री पडी तमाम सामिग्री को यथा शक्ति संजोकर यह शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया है।

श्रमसाध्य कार्य में मुझे अनगिन पुस्तकालयों की शरण लेनी पड़ी है। मै विशेष रूप से रज़ा लाइब्रेरी रामपुर, विवेकानन्द पुस्तकालय शाहजहाँपुर, लखनऊ भातखण्डे विश्वविद्यालय के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ।

डा0 (श्रीमती) रजनी भटनागर जिनके कुशल निर्देशन में मैं यह शोध प्रबन्ध प्रस्तुत कर सकी हूँ के प्रति मैं ह्रदय से आभारी हूँ और अनुभव करती हूँ कि मैं श्रण–भार जीवन पर्यन्त मुक्त नहीं हो सकूँगी।

उत्तर प्रदेश गन्ना शोध परिषद के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 सुरेश मिश्र जो सुधी साहित्यकार और हिन्दी मंचों के ख़्यातिलब्ध संचालक भी हैं ने सम्पूर्ण साह्रदयता के साथ मेरी इस शोध यात्रा में उंगंली पकड़कर चलाया है उनके प्रति कोटिशः आभार!

SAMPLE

मैं अपनी सफलता का श्रेय सबसे अधिक अपने पिता श्री देवेन्द्र कुमार सक्सेना एंव माँ श्रीमती विद्या सक्सेना जिनके अपार स्नेह एंव सम्मवल के सहारे यह सब सम्भव हो सका है। के प्रति भी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ।

श्री हरिलाल अरोरा जिन्होनें अथक प्रयत्न से मेरा शोध प्रबन्ध सुन्दर ढ़ंग से टंकित किया है वे भी बधाई के पात्र हैं।

अंत में मैं उन समस्त विद्धानों, गुरूजनों, संगीतज्ञों के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ। जिनका सहयोग मुझे निरन्तर मिलता रहता है।

प्रतिभा सक्सेना

नहीं • SAMPLE

1

हिन्दी ग़ज़ल का उद्भव, विकास एवं संभावनायें

(अ) ग़ज़ल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

विषय प्रवेश

सम्भवतः सृष्टि के ऊषाकाल में भोर की पहली किरण के साथ किसी झुरमुट में पक्षियों के कलरव से गीत के पहले बोल फूटे होगें। ऐसा लगता है कि यह स्वर बहुत लम्बे समय तक अनन्त रस–वर्षा करते हुए भी अजाने और गुमनाम रहें होगें। आदि मानव ने सभ्यता के दौर में आने से पहले संगीत के इन प्राकृतिक स्वरों का रसास्वादन अवश्य किया होगा। प्रकृति के चितेरे कवि सुमित्रानन्दन पंत ने अपनी एक रचना में चिड़ियों के संगीत का जीवन्त विवेचन कुछ इस तरह किया है।

पेड़ों का झुरमुट
चिड़ियाँ थीं बोल रहीं
टीवी टुट, टीवी टुट, टीवी टुट

कहते हैं कि आदि कवि बाल्मीकि ने क्रौंच वध की घटना से द्रवित होकर पहली कविता को जन्म दिया था।

''वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान''

यह सार्वभौमिक सत्य है कि गीत हो, कविता हो अथवा संगीत तब तक सिद्ध नहीं होता जब तक इसकी आत्मा में दर्द ना पिरोया गया हो।

SAMPLE